© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

कुमारसंभवम् महाकाव्य एवं पर्यावरण

साधना देवी
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

महाकवि कालिदास द्वारा विरचित कुमारसम्भवम् एक महाकाव्य ग्रन्थ है जो सत्रह सर्गो में विभक्त है। यद्यपि इस ग्रंथ में कवि ने शिव, पार्वती, कार्तिकेय इत्यादि का मुख्य रूप से वर्णन किया है, तथापि इन्ही विषयों के साथ–साथ कवि ने युक्त ग्रन्थ में पर्यावरण के प्रति अपना जो सद्भाव दिखलाया है उससे यह प्रतीत होता है कि वे एक महान प्रकृतिवादी कवि थे लगभग अपने सभी ग्रन्थों उन्हें प्रकृति के जो अपना समर्पण भाव दिखलाया है संभवतः वह इसी बात की ओर इंगित करता है कि प्रकृति प्रेम से बड़ा आनन्द संसार में कहीं भी नहीं हैं, जो धरातलीय दृष्टि से देखने पर यथार्थ भी प्रतीत होता है प्रकृति की गोद जो शान्ति व सुख मिलता है वह अन्यत्र कहीं भी नही मिलता है प्रकृति से विमुख होने को दुष्परिणाम आदि सबके समक्ष उपस्थित है अतः यह कहना अधिक तर्कपूर्ण प्रतीत होगा कि कालिदास आदि कवियें का उद्देश्य के बल प्रेमी–प्रेमिका या राजा, प्रजा व वर्णन करना ही उद्देश्य नहीं था, वरन् साथ ही तत्कालीन समाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, और भौगोलिक परिस्थितियों से भी अवगत कराना उनका उद्देश्य रहा होगा। और इन सब में भी कालिदास को भौगोलिक परिस्थितियां अत्यन्त रोचक रही होगी, जिसके कारण इन्हें प्रकृति से अगाध स्नेह रहा होगा। उनमें भौगोलिक परिदृश्य को कुमारसंभवम् ग्रन्थ के मंगलाचरण में भी देखा जा सकता है–

अत्स्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।[1]

उमा की उत्पत्ति नामक प्रथम सर्ग के आरम्भ में कवि ने अपने प्रकृति–प्रेम का प्राकट्य मंगलाचरण में पर्वतो के राजा हिमालय की श्रेष्ठता से किया जो आज भी विश्व में सबसे ऊंचा पर्वत माना जा रहा है। इसके पश्चात् कवि ने सुमेरू पर्वत का वर्णन किया, जिसका महत्ता का वर्णन इन्होनें निम्न श्लोक से माध्यम से किया है। कवि ने अपने उक्त ग्रथ के प्रथम संर्ग में भागीरथी और देवदारू वृक्ष का बहुत ही सुन्दर प्रकृति चित्रण करते हुए कहा है–

भागीरथीनिर्झरसीकाराणां वोढ़ा मुहः कम्पितदेवदारूः।
यद्धयुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते भिन्नशिखण्डिबर्हः।[2]

पार्वती को पुष्पों से भी अधिक सुन्दर बताते हुए उन्होनें कहा है–

तेना·मरवधुहस्तैः सदयालूनपल्लावाः।

अभिज्ञाश्च्छेदपातानां क्रियन्ते नन्दनद्रुमाः।।[3]

व

मन्दकिन्याः पयः शेषं दिग्वारणमदाविलम्।

हेमाम्भोरूहसस्यानां तद्वाप्यो धाम साम्प्रतम् ।।[4]

अतः कवि का कहने का अभिप्राय यह हो सकता कि सौन्दर्य धान में पार्वती के बाद द्वितीय स्थान इन शिरीष आदि पुष्पों का ही है।

प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमार सम्भवम् के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिखर के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बी–लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही हैं, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हों।[5]

वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा हो।[6]

पूर्व में अंधेरा बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतप रूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो।[7]

सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है, तो हिमालय के निर्झरो पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे–धीरे मिटते जा रहे हैं।[8]

कमल का कोश बन्द हो रहा है, पर भीतर प्रवेश करते भ्रमर को स्थान देने के लिए कमल जैसे मुंदते–मुंदते ठहर गया है।[9]

अस्त होते सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ रही हैं, उनकी नोंके रक्त, पीत और कपिश हो गयी हैं, जैसे सन्ध्या ने पार्वती को दिखाने के लिये तूलिका उठा कर उन पर रंग–बिरंगी छवियाँ उकेर दी हों।

कुमार सम्भवम् में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानो स्वर्ग को धरती से मिला दिया है–

शक्यमोषधिपतेर्नवोदयाः कर्णपूरचनाकृते तव।

अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटैः करा।।[10]

कुमार सम्भवम् महाकाव्य के उमासुरतवर्णन नामक अष्टम सर्ग में कवि ने उमा को चन्द्रमा और प्रकृति के साथ तादात्म्य दिखलाते हुए वर्णन किया है–

रक्तभावमपहाय चन्द्रमा जात एष परिशुद्धमण्डलः
विक्रया न खलु कालदोषजा निर्मलप्रकृतिक स्थिरोदया।[11]

आगे भी कवि ने उमा के सौन्दर्य का वर्णन प्रकृति से जोड़कर करते हुए कहा है–

चन्द्रपाजनितप्रवृत्तिभिश्चन्द्रकानतजलबिन्दुभिर्गिरः।
मेखलातरुषु निद्रितानमून्बोधयत्यसमये शिखण्डिनः।।[12]

व

कल्पवृक्षशिखरेषु सम्प्रति प्रस्फुरदिभ्रिव पश्य सुन्दरि।
हारयष्टिरचनामिवांशुभिः कर्त्तुमद्यतकुतूहलः शशी।।[13]

कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल (फिसल) कर छन–छन कर धरती पर गिरती चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा–उठा कर पार्वती के केशों में सजाने का उनका मन होने लगता है–

शक्यमङ्गुलिभिरूत्थितैरधः शाखिना पतितपुष्पपेशलैः।
पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरूत्कचयितुं तवालकान्।।[14]

प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है–

अङ्गुलीभिरिव केशसंचयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभिः।
कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी।।[15]

उत्प्रेक्षा और स्वभावोक्ति उत्कृष्ट संसृष्टि कवि ने इस प्रकार के प्रकृति–चित्रणों में की है। उक्त पद्य में 'कुडमलीकृतसरोजलोचनं' कामिनी का लज्जा से नेत्र मूंदने का चित्र होने से वल्लभदेव के अनुसार स्वभावोक्ति है, जबकि 'जुम्बतीव' में समासोक्ति तथा उत्प्रेक्षा दोनों अलंकार आ गये हैं।

महाकवि कालिदास ने यद्यपि प्रायः प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है, किन्तु कुमार सम्भवम् के वर्षा चित्रण में भयावहता दर्शनीय है–

घोरान्धकारनिकरप्रतिमो युगांत–

कालानलप्रबलधूमनिभो नभोसन्ते।

गर्जारवैर्विघटयचन्नवनीधराणां

शृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम।।[16]

कार्तिकेय के वारुणास्त्र चलाते ही भंयकर अंधेरा करती हूई प्रलय की आग के उठे हुए धुँए के समान ऐसी काली–काली घटायें आकाश में छा गयीं जिनके गर्जन से पहाड़ की जोटियों तक दरारें पड़ गयीं।

पर्यावरण, वातावरण या प्रकृति, ये शब्द अर्थ की दृष्टि से काफी कुछ मिलते–जुलते हैं। भारतीय मनीषा में पंच महाभूत तथाा अष्टप्रकृति के नाम से जिन मुख्य तत्वों को माना गया है, उन्हें हम आज भी–आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा आदि के रूप में देख सकते हैं। पर्यावरण शुद्धि और संतुलन की दृष्टि से यज्ञ का महत्व आज वैज्ञानिकों ने भी मान लिया है, अतः उपर्युक्त तत्वों में यज्ञकर्ता को भी आठवें क्रम पर स्वीकार किया गया था। ऋषियों ने आध्यात्मिक पर्यावरण को भी भौगीलय व खगोलीय पर्यावरण के अभिन्न हिस्से के रूप में माना। वैदिक शान्ति पाठ में भी हम इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों की शान्ति और समन्वय की प्रार्थना अथवा कामना अनादिकाल से करते आए हैं। यह स्वाभाविक ही है कि इसी वैदिक पृष्ठभूमि पर भारतीय संस्कृति के अमर गायक के रूप में अवतरित होने के कारण महाकवि कालिदास आदि ने भी बड़े रोचक, प्रभावों तथा व्यावहारिक ढंग से पर्यावरण के प्रति संवेदना तथा सजगता की बातें बताईं।

लगभग यही दृश्य हिमालय पर्वत पर पार्वती देवी के तपस्या करते समय स्थापित हो गया। जो कुछ अज्ञानी किन्तु प्रभावशाली लोग अच्छे खासे ''मंगल'' को ''जंगल'' में बदलने पर उतारू हैं ''पृथ्वी सम्मेलनों'' में घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। उन्हें कालिदास साहित्य के इस जंगल में मंगल, संबंधी न केवल सराहनीय अपितु अनुकरणीय संदेश को ग्रहण करना चाहिए।

हिमालय हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का उच्चतम प्रतीक होने के साथ–साथ भूगोल, खगोल और पर्यावरण का भी सर्वोच्च नियामक है। जीवनदायिनी, गंगा–यमुना नदियों का जनक अतः 'गंगोजमन' की संस्कृति का भी विधाता है। प्रसाद, पन्त, निराला, दिनकर तथा इकबाल जैसे उनके महाकवियों ने राष्ट्र सजग प्रहरी के रूप में हिमाद्रि के तुंग श्रृंगो की प्रशस्ति की। किन्तु यदि इसे देवताओं का भी आत्मस्वरूप मानक, पूर्व से पश्चिम तक पृथिवी को नापने वाले 'मानदण्ड' (मीटर) के रूप में तथा अनन्त रत्नों के अखण्ड भण्डार के रूप में इसकी अर्चना और वंदना करने वाला कोई प्रथम राष्ट्रकवि हुए तो कालिदास जी हैं। वे लिखते हैं–

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयों नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथ्विया इव मानदण्डः।।[17]

देवाधिदेव महादेव शंकर, प्रदूषण रूपी कालकूट विष को पीने के कारण ही महामृत्युंजय कहलाए। अब समुद्रमन्थन को पृथक मानने की मान्यता को वैज्ञानिक भी ध्वस्त कर चुके हैं। वे समस्त वन्य पशु आदि के स्वामी होने से पशुपति कहलाते हे। वस्तुतः तो वे प्राणिमात्र के प्राणनाथ अतः भूतनाथ और विश्वनाथ माने गये है। ये नाम बड़े सार्थक है। प्रकृति प्रेमियों को इन पर इस दृष्टि से भी चिन्तन और मननकरना चाहिए। वे कालिदास के आराध्य भी हैं। प्रायः हर ग्रन्थ के शुभारंभ के मंगल श्लोंको में कवि ने उन्हें एक व्यापक पर्यावरणीय देव के रूप में स्मरण किया। मध्यप्रदेश के भिण्ड क्षेत्र से पाँचवी सदी की एक मूर्ति मिली है,

जिसमें सीता अशोक वृक्ष के नीचे शोकाकुल बैठी हुयी है। कुषाण कालीन मूर्तियों में भी वृक्ष दिखलाये गये है। सॉची के स्तूप (150ई0पू) में भी आम्र प्रतिमाएँ चित्रित हुई (150 ई0पू0) में भी आम्र प्रतिमाएँ चित्रित हुई है। मूर्तिकला के भी पर्यावरण चेतन होने के संकेतक है।

भारत साहित्य संस्कृति, लोक, जीवन आदि से किस हद तक रस हीन बना सकता था कालिदास ने हिमालय के ही भव्य चित्रण से अपने काव्य कुमारसंभवम् का प्रारम्भ करते हुए उसे देवात्मा नगाधिराज पर्वतो का राजा तथा पूर्व और पश्चिम समुद्र रूपी पलड़ो को सम्हाले हुए मानदण्ड तराजू की दण्डी कहा।

निष्कर्षः—महाकवि कालिदास ने यद्यपि अपने उक्त ग्रन्थ में प्राकृतिक सौन्दर्य का ही वर्णन किया है, किन्तु पर्यावरण सम्बन्धी जो मार्मिक चित्रण इन्होनें उपर्युक्त दृष्टि से की है, उससे प्रत्येक मनुष्य को प्राकृतिक चेतना की प्रेरणा अवश्य मिलती है, अतः पर्यावरण की दृष्टि से कालिदास का यह ग्रन्थ अत्यन्त ही लाभ प्रद व अनुकरणीय है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमारसंभवम् 1/1
2. कुमारसंभवम् 1/5
3. कुमारसंभवम् 1/41
4. कुमारसंभवम् 1/44
5. पश्य पश्चिमदिगन्त लम्बिना निर्मितं मितकथे विवस्ता।
   दीर्घया प्रतिमया सरोम्भसां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्।।(कुमारसंभवम् 8. 34)
6. एष वृक्षशिखरे कृतास्पदो जातरूपरसगौरमण्डलः।
   हीयमानमहरत्ययातपं पीवरोरू पिबतीव बर्हिणः।। **(कुमारसंभवम् 8.36)**
7. पूर्वभागतिमिर प्रवृत्तिभिर्व्यक्तपंकमिव जातमेकतः।
   खंतातपजलं विवस्वता भाति किंचियदिव शेषवत्सरः।। **(कुमारसंभवम् 8/37)**
8. आविशदि्भरूटजा3णं मृगैर्मूलसेकसरसैचवृक्षकैः..... **(कुमारसंभवम 8/38)**
9. बद्धकोशमपि तिष्ठति क्षणं सावशेषविवंर कुशेशयम..... **(कुमारसंभवम 8/39**
10. कु.सं.8.62
11. कु.सं.8.65
12. कु.सं.8.67
13. कु.सं.8.68
14. कु.सं.8.72
15. कु.सं.8.63
16. कु.सं.17.4
17. कु.सं.1.1

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमारसंभवम्–व्या0 डॉ. रामचन्द्र वर्माशास्त्री
   (नवीन शाहदरा दिल्ली–2000)
2. कुमारसंभवम्– टीकाकार डॉ. रामचन्द्र वर्मा शास्त्री (मनोज पब्लिकेशन नई दिल्ली–1984)
3. कुमारसंभवम्–कपिलदेव भाषा–द्विवेदी
4. कुमारसंभवम्–भाषा भाष्यकार श्री पं0 प्रद्युम्नपाण्डेयः